मोदी और केजरीवाल-एक ही सिक्के के दो पहलू

मनोज कुमार झा/ वीना भाटिया

इसे देश की वर्तमान राजनीति की विडंबना ही कहेंगे कि सत्ता में आने के चंद दिनों के बाद ही आम आदमी पार्टी के नेता और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का रंग बहुत तेज़ी से बदला। जो केजरीवाल मुख्यमंत्री पद की शपथ लेते हुए कह रहे थे कि अहंकार से बचना होगा, वह अहंकार इस तरह उनमें और उनके खासमखास लोगों में दिखाई पड़ने लगा, जिसकी उम्मीद उनके समर्थकों को नहीं थी।

अब हाल ये है कि अरविंद केजरीवाल अपनी पार्टी में ऐ तानाशाह के रूप में उभर चुके हैं। आम आदमी पार्टी में उनसे अलग राय रखने वालों के लिये कोई जगह नहीं है। उनहोंने योगेन्द्र यादव, प्रशांत भूषण, प्रो. आनंद कुमार, प्रो. अजीत झा को तो पार्टी से निकाल ही दिया, पार्टी के लोकपाल एडमिरल रामदास को भी बाहर का रास्ता दिखा दिया। भूलना नहीं होगा कि अरविंद केजरीवाल लोकपाल के मुद्दे पर हुए आंदोलन से ही उभरे नेता हैं, जिन पर जनता ने इतना भरोसा किया, जितनी उम्मीद की, शायद ही किसी से की हो। यह भी नहीं भूलना होगा कि पहली बार दिल्ली का मुख्यमंत्री बनने के बाद लोकपाल बिल के मुद्दे पर ही उन्होंने इस्तीफ़ा दे दिया था। ऐसा व्यक्ति अपनी अपनी पार्टी में ही लोकपाल को स्वीकार नहीं कर सका। इससे उनके बहुत सारे समर्थकों को हैरत के साथ ही गहरी निराशा भी हुई। पर बंपर बहुमत से सत्ता में आए केजरीवाल को अपने समर्थकों की कोई खास परवाह नहीं रह गई है। मनीष सिसोदिया को उपमुख्यमंत्री बनाकर शासन के रोजमर्रा के कामों से बेफ़िक्र हो चंद समर्थकों से घिरे अरविंद केजरीवाल पूरी तरह से निरंकुश रवैया अपना चुके हैं। कहा जा सकता है कि आम आदमी की बात कर, लोग़ों को झूठे वायदों और लोकलुभावन प्रचार के तौर तरीके अपना कर सत्ता में आए केजरीवाल गिरगिट की तरह रंग बदलने में दूसरे किसी भी दल के नेताओं से जरा भी कमतर नहीं निकले। इस बीच, ऐसे कई स्टिंग सामने आ गए जो स्टिंग को ही औज़ार बनाने वाले अरविंद केजरीवाल की असलियत बयान कर गए। खुद केजरीवाल के जो स्टिंग सामने आए, उनसे साबित हो गया कि वह दूसरी पार्टियों के नेताओं से ज़रा भी कम शातिर नहीं है। केजरीवाल का जो स्टिंग उनके सहयोगी ने किया, उससे साबित हुआ कि इन्होंने कांग्रेस के सहयोग से, दूसरे दलों में सेंघ लगा कर, विधायकों को खरीद कर या उन्हें पद का लालच देकर भी यानी किसी भी तिकड़म से सरकार बनाने की असफल कवायद की थी।

बहरहाल, केजरीवाल अब कह रहे हैं कि उन्होंने अपने वादे पूरे कर दिए। दिल्ली की जनता की बिजली-पानी की समस्या हल कर दी। भ्रष्टाचार पकड़ने का मोबाइल स्टिंग ऐप ज़ारी करते हुए उन्होंने घोषणा कर दी कि अब भ्रष्टाचार मिटाने का वादा भी पूरा

हुआ। यानी केजरीवाल ने जनता को दूसरे नेताओं की तरह ही पहले दर्जे का बेवकूफ़ समझ लिया। केजरीवाल का यह समझना गलत भी नहीं है, क्योंकि उन्हें जैसा बहुमत मिला, उसकी उम्मीद उन्हें कतई नहीं थी। आशातीत सफलता से आदमी का दिमाग फ़िर जाता है, पर जनता जब असलियत समझ जाती है, तो सत्ता से हटाने में भी देर नहीं करती। देश की राजनीति में यह कई बार साबित हो चुका है। जिसे जनता ने सिर-आंखों पर बिठाया, उसके बदगुमान और धोखेबाज साबित हो जाने पर हटाने में भी देर नहीं की। इंदिरा गांधी से लेकर विश्वनाथ प्रताप सिंह तक के उदाहरण सामने हैं, पर केजरीवाल पर सत्ता का नशा कुछ ऐसा चढा है कि वह मदहोश दिख रहे हैं। एक वजह तो ये भी है कि वह समझ रहे हैं कि अगले पांच साल तक उनकी कुर्सी पर कोई ख़तरा नहीं है और आगे क्या होगा, संकुचित मनोवृत्ति के लोग इस पर ज्यादा ध्यान नहीं देते। पांच साल में अरविंद केजरीवाल और उनके सहयोगी सत्ता की इतनी मलाई तो जरूर हजम कर लेंगे कि उनकी आने वाली पीढियों को भी सोचना नहीं पड़ेगा। तो क्या इसका मतलब ये समझा जाए कि दूसरे दलों के नेताओं के चरित्र और स्वभाव से केजरीवाल का चरित्र और स्वभाव पूरी तरह मेल खाता है? यह सवाल ऐसा है जो लोग़ों को अजीब ही उधेड़बुन में डाले हुए है, खासकर उन लोगों को जो केजरीवाल को किसी क्रांतिकारी के तौर पर देख रहे थे। जिन्हें यह उम्मीद थी कि केजरीवाल सत्ता में आते ही कुछ ऐसे बदलाव करेंगे कि व्यवस्था के ढांचे में बदलाव की प्रक्रिया तेज़ होगी और एक नई क्रांति ही हो जाएगी। कम से कम लोग इतनी उम्मीद तो कर ही रहे थे कि वे कुछ ऐसे सुधारवादी कार्यक्रमों पर अमल करेंगे, जिनसे दिल्ली के आम जनता को राहत मिलेगी। दुर्भाग्य से ऐसा कुछ भी नहीं होने जा रहा है। दिल्ली की आम जनता को कुछ भी नहीं मिलने जा रहा है।

झूठे वायदों के बादशाह, जुमलेबाज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की तरह दिल्ली का मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल भी जुमलेबाज़ और धोखेबाज़ ही है। इसमें अब किसी को कोई शक नहीं होना चाहिए। अरविंद केजरीवाल भी उन्हीं थैलीशाहों का एजेंट है, जिन थैलीशाहों के प्रधान सेवक नरेन्द्र मोदी है। भूलना नहीं होगा कि केजरीवाल ने नारा दिया था कि केन्द्र में मोदी और दिल्ली में केजरीवाल। इस आदमी को भगवा से कोई परहेज नहीं है। इसका मुख्य सिपहसालार जो एक भड़ैत है कवि कुमार विश्वास, उसके राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से गहरे संपर्क रहे हैं और कुछ लोग़ों का तो यहां तक मानना है कि अरविंद केजरीवाल भी कहीं आरएसएस का ही छुपा एजेंट तो नहीं है। यह आशंका निराधार नहीं है। अरविंद केजरीवाल जिस अन्ना आंदोलन की उपज हैं, वो अन्ना क्या हैं? अन्ना आरएसएस के समर्थक हैं। क्या यह बात किसी से छुपी है? फ़िर लोग अरविंद केजरीवाल से क्या उम्मीद कर सकते हैं? जिस व्यक्ति की कोई विचारधारा नहीं, जो स्टिंग करके सारी समस्याओं का समाधान करना चाहता हो, जो किसी भी हाल में सत्ता में आना चाहता हो, चाहे कांग्रेस के समर्थन से, चाहे भाजपा के समर्थन से, वह क्या लोगों की समस्याएं दूर कर सकता है? केजरीवाल क्या कर सकते हैं और क्या करने जा रहे हैं, यह जनता को बहुत जल्दी समझ में आने लगा है। जितनी जल्दी लोग़ों का मोदी से मोहभंग हुआ, उतनी ही जलदी केजरीवाल से भी हुआ। यानी इनका चरित्र एक ही जैसा है। एक खुला संप्रदायवादी है, एक ने चेहरे पर नकाब डाल रखा है। पर नकाब उतरते कितनी देर लगती है। लेकिन फ़िर भी कोई फ़र्क नहीं पड़ता। पहले जनता से पूछ-पूछ कर निर्णय लेने का दिखावा करने वाला आदमी सत्ता मिलते ही किसी तरह का दिखावा करने की भी जरूरत नहीं समझता और तानाशाही पर उतर आता है। यही मोदी भी कर रहे हैं और यही कर रहे हैं केजरीवाल। दोनों सपनों के सौदागर साबित हुए।

अब देखना है कि सपनों के ये दोनों

बहरहाल इनके विरोधी गुट के जो नेता हैं-प्रशांत भूषण, योगेन्द्र यादव, प्रो. आनंद कुमार आदि, उनकी भी वैचारिक स्थिति अस्पष्ट है। ये पिटने के बाद, पार्टी से अपमानित कर निकाले जाने के बाद भी आम आदमी पार्टी में संभावनाएं तलाश कर रहे हैं। निकट भविष्य में इन दोनों गुटों के बीच होने वाले संघर्ष के तमाशे पब्लिक को ज़रूर देखने को मिलेंगे। जाहिर है, जो गुट सत्ता पर क़ाबिज है, वो भारी पड़ेगा। इसकी वजह ये है कि सत्ता की मलाई किसे बुरी लगती है?

सौदागर, जिनका फ़िलहाल कोई विकल्प नज़र नहीं आता, जनता को कब तक और किस हद तक गुमराह करने में सफल रहते हैं। जनता विकल्पहीनता की स्थिति के कारण कभी इसे तो कभी उसे आजमाने पर विवश है और हर बार धोखा खा रही है। जहां तक भगवां पार्टी का सवाल है, तो वह डंका बजाने में लगी है। झूठ, फ़रेब, कुचाल, परले दर्जे की नीचता पर उसकी राजनीति टिकी हुई है। तो केजरीवाल भी उनसे ज़रा भी कम नज़र नहीं आ रहे। स्टिंगबाजी फ़रेब ही है। स्टिंग केजरीवाल को बहुत प्रिय है। इसकी वजह ये है कि वह हवा-हवाई नेता हैं। अफ़सरी करते-करते ईमानदारी इतनी कुलबुलाने लगी कि भ्रष्टाचार को ही सारी समस्याओं की जड़ मान बैठे। लेकिन भ्रष्टाचार होता है क्या और क्यों पैदा होता है, यह जानना गैर ज़रूरी समझा। नया-नया आरटीआई क़ानून आया तो उसके हाईप्रोफाइल कार्यकर्ता-नेता बन गये। मैगसेसे अवार्ड मिलने के बाद और संघ के एजेंट अन्ना के आंदोलन में जब लोकप्रियता की चाट लगी तो सत्ता में आने के सपने देखने लगे। अपनेआपको ईमानदारी का पुतला, भ्रष्टाचार का दुश्मन और आख़िर में मसीहा समझने लगे। इनके पीछे-पीछे वकील बैरिस्टर, बड़े-बड़े रिटायर्ड अफ़सर, प्रोफ़ेसर, हाईप्रोफ़ाइल पत्रकार, फिल्म अभिनेत्रियां-अभिनेता सारे जुटने लगे और केजरीवाल को लगा कि सत्ता हासिल करने का सपना पूरा हो सकता है। विकल्हीनता के शून्य में क्या नहीं हो सकता है। जो जनता पहले ही सबको आजमा चुकी हो, कोई नया ईमानदारी का चोगा पहन कर आए और कर ठेठ दिल्ली वालों के अंदाज में बोलना शुरू करे, तो एक बार क्यों नहीं उस पर भरोसा करेगी और उसे आजमाना चाहेगी।

जिस तरह मोदी को देश की राजनीति में व्याप्त विकल्पहीनता के शून्य का फ़ायदा मिला, ठीक उसी प्रकार केजरीवल को भी विकल्पहीनता के शून्य का फ़ायदा मिला। साथ ही, अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे तमाम भाजपाविरोधी दलों-वामपंथियों का समर्थन भी केजरीवाल को मिला। बहुतों को केजरीवाल में युगपुरुष के दर्षण होने लगे। लोकलुभावन नारों और प्रचार के नए तौर-तरीकों से दिल्ली की आम जनता केजरीवाल से काफ़ी प्रभावित नज़र आई। परिणाम ये कि केजरीवाल अब दिल्ली की सत्ता पर पूरे पांच साल के लिये काबिज़ हो चुके हैं और उन लोग़ों को बाउंसरों तक से पिटवा कर मीटिंग से भी खदेड़ चुके हैं, जो पार्टी के संस्थापक सदस्यों में थे। मोदी ने भी अपनी भाषण शैली और प्रचार के खास तौर-तरीकों से जनता को प्रभावित किया था। केजरीवाल ने भी यही काम किया। जिस तरह मोदी तमाशे कर जनता को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं, केजरीवाल भी करते हैं। हाल ही में चरखा कातते इनकी तस्वीर मीडिया में सामने आई। 'इंसान का इंसान से हो भाईचारा...' यह पैगाम देने वाला शख्स अपनी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं से ही भाईचारा जब नहीं निभा सका तो वह आम आदमी से क्या निभायेगा?

बहरहाल इनके विरोधी गुट के जो नेता हैं-प्रशांत भूषण, योगेन्द्र यादव, प्रो. आनंद कुमार आदि, उनकी भी वैचारिक स्थिति अस्पष्ट है। ये पिटने के बाद, पार्टी से अपमानित कर निकाले जाने के बाद भी आम आदमी पार्टी में संभावनाएं तलाश कर रहे हैं। निकट भविष्य में इन दोनों गुटों के बीच होने वाले संघर्ष के तमाशे पब्लिक को ज़रूर देखने को मिलेंगे। जाहिर है, जो गुट सत्ता पर क़ाबिज है, वो भारी पड़ेगा। इसकी वजह ये है कि सत्ता की मलाई किसे बुरी लगती है? केजरीवाल दिल्ली को अपनी जागीर समझने लगे हैं। दिल्ली से बाहर निकलने का इरादा उन्होंने छोड़ दिया है, क्योंकि उन्हें पता है कि ताकत से ज़्यादा पांव पसारने की कोशिश बेकार साबित होगी। लोकसभा चुनावों के दौरान बनारस से लड़ने का अनुभव भी उनके काम आ रहा है। इस बीच, ऐसे कई लोग जो अलग-अलग राज्यों में आम आदमी पार्टी की कमान संभाल रहे थे, मोहभंग हो जाने के कारण केजरीवाल से अलग हो चुके हैं। मेघा पाटकर भी केजरीवाल को कोस कर उनसे अलग हो गईं।

कुल मिलाकर, इससे यही साफ़ होता है कि पूंजीवादी व्यवस्था का संकट ज्यादा ही गहराता चला जा रहा है। यह पूंजीवाद का वह दौर है, जहां विकल्प हेतु छटपटाहट काफ़ी बढ़ गई है, पर कोई जनविकल्प कहीं आकार लेता दिख नहीं रहा। ऐसे ही दौर में सर्वसत्तावादी शक्तियां उभर कर सामने आती हैं। भगवां ऐसी ही ताक़त है। सर्वसत्तावादी। और केजरीवाल ने भी सर्वसत्तावादी रुझान दिखा दिया है। मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर और गुरुद्वारे इनकी ताकत हैं। लोग़ों की धार्मिक भावनाओं को उभार कर, ईश्वर की दुहाई देकर राजनीति करना आसान है। वही ये कह रहे हैं। दिल्ली की मुख्यमंत्री पद की शपथ लेते हुए केजरीवाल ने ईश्वर के प्रति आभार प्रकट किया था, जनता के प्रति नहीं। वहीं, मोदी जी ने तो कहा था कि उन्हें गंगा मैया ने बुलाया है। इस तरह, मोदी और केजरीवाल के मूल चरित्र में ज़्यादा फर्क नहीं है। दोनों जनता को धोखा देनेवाले हैं और येन-केन-प्रकारेन अपना उल्लू सीधा करने सत्ता में आए हैं। एक जनता का खुला दुश्मन है, तो एक छुपा।

सवाल है, यह खेल कब तक चलेगा? जनता कब तक छली जाएगी। जनविकल्प का उभार कैसे होगा और इतिहास की दिशा क्या है? यहां यह कहना समीचीन होगा कि यह सब देखते हुए स्पष्ट है कि जब तक श्रमशील लोग संगठित नहीं होते और राजनीति की मुख्य धारा में शामिल नहीं होते, ये प्रपंच ज़ारी रहेंगे। खलनायकों और विदूषकों का खेल ज़ारी रहेगा। कोई अपनी झूठी लोकप्रियता का डंका बजाएगा तो कोई स्टिंग को ही औज़ार बना कर और चरखा कातकर खुद को मसीहा घोषित करता रहेगा। आज सभी कह रहे हैं, केजरीवाल समेत, कि वे जनता की सेवा करने के लिये सत्ता में आना चाहते हैं या आए हैं। ऐसे में, जनता को यह समझना होगा कि उसे सेवा की दरकार नहीं, उसे तो अधिकार चाहिये। संसाधनों पर हक़ चाहिये। ये कोई दे नहीं सकता। इसके लिये जनता को संगठित होना होगा और लंबा संघर्ष चलाना होगा। जब तक ऐसा नहीं होता, मोदी और केजरीवाल जैसे लोगों और इन्हें अपने इशारे पर नचाने वाले थैलीशाहों की चांदी है। ये तरह-तरह के तमाशे दिखाते रहेंगे और जनता लुटती-पिटती रहेगी। केजरीवाल की राजनीति का हश्र देखते हुए सुधारवाद से लोगों का मोहभंग होना ही चाहिये। सिर्फ़ और सिर्फ़ व्यवस्था में आमूल-चूल बदलाव ही एकमात्र विकल्प है।

तुर्की-ब-तुर्की

''हम भी देशभक्त हैं। भगत सिंह ने देश के लिये जान दी थी। हम जीवित रह कर देश की सेवा कर रहे हैं।'' (बंगलूरू में भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में 10 करोड़ की सदस्यता की डींग हांकते हुए)

हमारा कहना है:-

- अमित शाह जी आपके मुंह से भगत सिंह का नाम सुन कर आपके पुरखों की नींद छूमंतर हो गयी होगी। एक ज़माने में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं में भगत सिंह ज़िन्दाबाद के नारे लगा करते थे और उनके चित्र पर माल्यार्पण किया जाता था। लेकिन जैसे ही सत्तर के दशक से भगत सिंह का लेखन जनता के बीच आने लगा, आप जैसे संघियों के हाथ-पांव फूल गये और उन्होंने भगत सिंह से किनारा कर लिया। लगता है आपने भगत सिंह को पढा नहीं वरना यह हीमाकत तो कतई नहीं करते।
- भगत सिंह सच्चाई की वह लौ है जिसे छूने से हर घटिया इंसान की आत्मा कांपेगी। एक बार भगत सिंह को समझ लो अमित शाह फ़िर तुम उनका नाम लेना भी भूल जाओगे। दरअसल भगत सिंह ने जिन सिद्धान्तों की लड़ाई लड़ी है वे भाजपाईयों और संघियों की सोच से बिल्कुल उलट हैं।
- भगत सिंह समाजवाद की बात करता था, तुम पूंजीवाद की बात करते हो। भगत सिंह साम्प्रदायिकता का कट्टर विरोधी था, तुम हिन्दुत्व लव-जिहाद, घर वापसी की बात करते हो। भगत सिंह गोरे अंग्रेज व काले अंग्रेज में फ़र्क नहीं मानता था, तुम लोग स्वयं काले अंग्रेज बन कर जनता को चूस रहे हो। भगत सिंह नास्तिक था, तुम धर्मांधता की राजनीति करते हो।
- खुद को भगत सिंह की शहादत से जोड़ने वाले अमित शाह यह भी सुन लो कि भगत सिंह के सपनों के भारत में तुम जैसों की जगह जेल की काल-कोठरियों में ही होनी थी। क्योंकि तब क़ानून किसान-मज़दूर के मतलब से बनाये जाते न कि कार्पोरेटों की मुनाफ़ाखोरी के लिये।
- तुम्हारे 10 करोड़ सदस्य बनाने के दावे पर भी जनता कम नहीं हंस रही है। अपनी तुलना भगत सिंह से करके तुम और भी लज्जाजनक रूप से हास्यास्पद हो गये हो। कहते हैं राजनीति में आगे बढने के लिये बहुत मोटी खाल की जरूरत होती है। लगता है तुमने इस विषय में तो जरूर ही विश्व-रिकार्ड बना डाला है। बेहयाई और बेशर्मी की रिकार्ड तोड़ खाल के बिना भगत सिंह का नाम तुम्हारी जुबान पर आता भी क्योंकर।